ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

हिन्दू महासभा का प्रारंभिक इतिहास : एक अध्ययन

अंकित

एमए, यूजीसी–नेट, इतिहास विभाग

सन्दर्भ

बीसवीं सदी के शुरुआत में सांप्रदायिक संगठनों की शुरुआत होना शुरू हो गई थी इसी समय हिंदू महासभा की स्थापना हुई। हिंदू महासभा की स्थापना से पूर्व अनेक हिंदू संस्थाओं की स्थापना विभिन्न वर्गों द्वारा प्रांतीय स्तर की गई थी। राष्ट्रीय स्थापना से पूर्व प्रांतीय स्तर पर हिंदू महासभा पंजाब में ज्यादा प्रभावशाली रही। राष्ट्रीय स्तर पर हिंदू महासभा की स्थापना अप्रैल 1915 में हरिद्वार में कुंभ मेले के दौरान की गई। कुंभ मेला सम्मेलन में शामिल महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानंद ने भी हिंदू महासभा की स्थापना का समर्थन किया। इस समय हिंदू महासभा के अध्यक्ष कासिम बाजार के महाराजा मुनींद्र चंद्र नंदी ने हिंदू महासभा की ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी, हिंदू एकजुटता और बिना किसी विशेष हिंदू समुदाय या किसी विशेष संप्रदाय के साथ अपनी पहचान किए बिना सामाजिक सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। हिंदू महासभा एक तरफ जहां धार्मिक व सांस्कृतिक आयोजनों द्वारा हिंदू चेतना को जागृत करती थी वहीं दूसरी तरफ चुनाव संबंधी मामलों में जहां हिंदुओं के प्रति सौतेला व्यवहार हो रहा था, वहां ब्रिटिश सरकार से संघर्ष करती थी।

परिचय

राष्ट्रीय स्तर पर हिंदू महासभा की स्थापना अप्रैल 1915 में हरिद्वार में हुई जिसकी अध्यक्षता कासिम बाजार के महाराजा मनिंद्र चंद्र नंदी द्वारा की गई। अखिल भारतीय स्तर पर स्थापना से पूर्व प्रांतीय स्तर पर हिंदू महासभा स्थापित की गई थी, सबसे पहले पंजाब प्रांत में 1909 में पंजाब हिंदू सभा की स्थापना की गई थी। इसकी स्थापना के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण रहे थे। पंजाब के बाद बंगाल तथा संयुक्त प्रांत में हिंदू सभा की स्थापना हुई। राष्ट्रीय स्थापनासे पूर्व हिंदू सभा पंजाब में सर्वाधिक प्रभावी रही। इसके प्रमुख नेता पंडित मदन मोहन मालवीय, लाला लाजपत राय, बी.एन. मुखर्जी तथा लालचंद थे। संयुक्त प्रांत में हिंदू महासभा सबसे बड़े व्यापारिक शहरों अर्थात इलाहाबाद, कानपुर, बनारस और लखनऊ में केंद्रित थी। संयुक्त प्रांत में हिंदू महासभा को अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वकीलों तथा वर्गों के लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ जो सरकार और विधायिका में हिंदू हितों की रक्षा करने की विफलता से नाराज थे।

हिंदू महासभा का प्रारंभिक स्वरुप

बीसवीं सदी के शुरुआत में भारतीय राजनीतिक परिदृश्य अत्यंत महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को बल मिल रहा था। लेकिन फिर भी ब्रिटिश इंडिया में हिंदू मुस्लिम और सिख समुदायों द्वारा सांप्रदायिक संगठनों की स्थापना की गई। इन संगठनों ने यह दावा किया कि वास्तव में वह उनसे संबंधित सम्माननीय धार्मिक समुदाय के लोगों के प्रतिनिधि थे। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने भारतीय लोगों के बीच अलगाव और अपमान की भावना को प्रबल किया गया था लेकिन 19 वीं सदी में चले सामाजिक धार्मिक आंदोलनों ने हिंदुओं को अपनी पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हिंदू चेतना को जिस रूप में सांप्रदायिकता की घटना से जोड़ा गया वह वास्तव में बीसवीं सदी की शुरुआत में विकसित होना शुरू हो गई थी।हिंदू महासभा की स्थापना से पूर्व भारत में अनेक संस्थाएं स्थापित हो चुकी थी जो हिंदुओं के विभिन्न वर्गों द्वारा स्थापित की गई थी परंतु इनके आपसी भेदभाव ज्यों के त्यों विद्यमान रहे। इन संस्थाओं में पूना सार्वजनिक सभा, महाजन सभा, वेद समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, धर्म सभा, सनातन धर्म सभा, क्षत्रिय सभा, गुरु सिंह सभा, जाट सभा आदि रही। परंतु इन संस्थाओं की स्थापना से हिंदू संगठन के एक भी उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो रही थी।

राष्ट्रीय स्थापना से पूर्व महासभा पंजाब में ज्यादा प्रभावशाली रही। 1910 में इलाहाबाद में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अखिल भारतीय हिंदू सभा बनाने का औपचारिक कदम उठाया गया। अग्रवाल महाजन तथा यू. पी. के 'वैश्य कमेटी' के अध्यक्ष लाला बैजनाथ की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई और अध्यक्ष के रूप में उन्होंने संविधान का प्रारूप तैयार किया लेकिन इतनी सफलता प्राप्त नहीं हुई।

1910 इलाहाबाद में हिंदू नेताओं की बैठक में अखिल भारतीय हिंदू सभा के स्थापना का प्रारंभिक कदम उठाया गया जो गुटीय संघर्ष के कारण लागू नहीं हो सका। पंजाब हिंदू सभा ने 7 व 8 दिसम्बर 1913 को अंबाला में आयोजित अपने पांचवें सत्र में अखिल भारतीय हिंदू सभा बनाने का प्रस्ताव पारित किया इस सम्मेलन में घोषित किया कि ''यह दृढ़ सलाह है कि भारत में तथा अन्य जगहों पर हिंदू समुदाय के हितों की रक्षा उपायों पर विचारदृविमर्श करने के लिए बहुत वांछनीय है कि भारत में हिंदुओं का एक सामान्य सम्मेलन 1915 में हरिद्वार में कुंभ के अवसर पर आयोजित किया जाए और सभी सज्जनों से अनुरोध है कि वह इस उद्देश्य के लिए आवश्यक व्यवस्था करें''।

देश के सभी हिस्सों के हिंदू नेता, जिनकी कुल संख्या 26 थी, हिंदू सभा समिति के लिए नामित किए गए जो बाद में पदाधिकारी नियुक्त किए गए। इस समिति के लिए 2000 रुपए का बजट पारित किया गया। लेकिन एक या अन्य किसी कारण से कार्यालय के गठन और कार्यवाही में चिंतन किए गए उपायों का पालन नहीं किया गया। बीसवीं शताब्दी के पहले दशक तक अखिल भारतीय हिंदू सभा के गठन पर बहुत कम प्रगति हुई थी।

वर्ष 1914 ईस्वी के अंत में अंबाला में आयोजित पंजाब हिंदू सभा के छठे सम्मेलन में एक बार पुनः अखिल भारतीय हिंदू सभा के निर्माण का संकल्प किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता राय साहिब लाला मुरलीधर ने की थी। 1915 के प्रारंभ में हिंदू सभा के महासचिव 'लाला सुखबीर सिन्हा' ने प्रमुख हिंदू नेताओं को एक पत्र भेजा जिसमें 13 फरवरी 1915 को हरिद्वार में 17 फरवरी को लखनऊ में और 27 फरवरी को दिल्ली में होने वाले अखिल भारतीय हिंदू सभा के सपनों की योजना बनाई गई।

अप्रैल 1915 में हिंदुओं का अखिल भारतीय सम्मेलन हरिद्वार में कुंभ मेले के दौरान आयोजित किया गया जहां सर्वदेशक हिंदू सभा (अखिल भारतीय हिंदू सभा) की स्थापना एक विशाल मोर्चे के रूप में की गई, जो हिंदू उत्थान का प्रतिनिधित्व करती थी। कुंभ मेला सम्मेलन में शामिल महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानंद ने हिंदू सभा की स्थापना का जोरदार समर्थन किया। हिंदू सभा सम्मेलन के अध्यक्ष कासिम बाजार के महाराजा मुनींद्र चंद्र नंदी ने हिंदू सभा की ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी की घोषणा की थी। उन्होंने घोषणा की कि हिंदू होने के नाते हम अपने धर्म के आधार पर सम्राट और सरकार के प्रति निष्ठावान हैं, अंग्रेजों और हमारे सहयोगियों की जीत के लिए हमारी प्रार्थनाएं दिन–रात बढ़ती रहेंगी। हिंदू सभा ने 'हिंदू एकजुटता' और बिना किसी विशेष हिंदू समुदाय या किसी विशेष संप्रदाय के साथ अपनी पहचान किए बिना सामाजिक सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया।

विषय समिति ने हिंदू सभा के लक्ष्यों को परिभाषित किया जो इस प्रकार थे–

- हिंदुओं की अधिक से अधिक संघीय तथा संपूर्ण एकता को बढ़ावा देना।
- हिंदू समुदाय के बीच शिक्षा को बढ़ावा देना।
- हिंदू समुदाय के सभी वर्गों की स्थिति सुधारने के लिए प्रयास करना।
- जब और जहां भी आवश्यक हो हिंदू हितों की रक्षा को बढ़ावा देना।
- भारत में हिंदू और अन्य समुदायों के बीच अच्छी भावनाओं को बढ़ावा देना और मित्रता स्वरूप कार्य करना तथा सरकार के साथ वफादारी से सहयोग करना।
- हिंदू समुदाय के धार्मिक, नैतिक, शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक हितों को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाना।

हालांकि हिंदू सभा में सामाजिक सुधार के एक तार्किक कार्यक्रम का अभाव था और राजनीतिक सवालों पर चर्चा से परहेज किया गया तथा इसमें देवनागरी लिपि, गाय संरक्षण आदि पर हिंदुओं में एकता और समरूपता विकसित करने का संकल्प लिया गया था। परंतु यह सभा कड़े रूप से ब्रिटिश की वफादार रही।

संगठन और सरंचना

आरंभिक काल में आरंभिक काल में हिंदू महासभा अपने संगठन की सीमा या उसकी गतिविधियों के मामले में एक अखिल भारतीय संगठन नहीं था। यह केवल एक ढीले अखिल भारतीय सरंचना वाला एक अनाकार और चौका देने वाला संगठन था। इसका निर्वाचन क्षेत्र अस्पष्ट था जो जातियों, संघों, धार्मिक आंदोलन, भाषा, समाज और स्थानीय हिंदू सभाओं पर आधारित था जिन्होंने अपने प्रतिनिधियों को सम्मेलनों के लिए चुना था। 18 वर्ष से अधिक उम्र के हिंदू व्यक्तिगत रूप से प्रतिवर्ष 5 आना भुगतान करके पार्टी के सदस्य बन सकते थे। हिंदू महासभा का विकास उत्तर भारत के हिंदी क्षेत्रों जैसे पंजाब, संयुक्त प्रांत, दिल्ली और पूर्व में बंगाल तथा बिहार में महत्वपूर्ण रहा था।

1915 से 1917 तक हिंदू महासभा संयुक्त प्रांत में अधिक प्रभावशाली रही क्योंकि इस बीच के तीनों राष्ट्रीय अधिवेशन हरिद्वार में संपन्न हुए और दो विशेष अधिवेशन मुंबई तथा लखनऊ में आयोजित किए गए। हिंदू महासभा का संस्था के रूप में रजिस्ट्रेशन 1 दिसंबर 1917 में 1860 के सोसाइटीज एक्ट के तहत लखनऊ में हुआ। अप्रैल 1921 में इसका नाम अखिल भारतीय हिंदू सभा से बदलकर अखिल भारतीय हिंदू महासभा रखा गया। दिसंबर 1918 में हिंदू महासभा का चौथा अधिवेशन दिल्ली में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता राजा सर रामपाल ने की थी। जिसमें भारत के विभिन्न प्रांतों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

सार संग्रह

हिंदू महासभा की स्थापना के बाद प्रारंभिक वर्षों के कार्यों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि इसके कार्य दो रूपों में विभक्त थे। हिंदू महासभा एक तरफ जहां धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों द्वारा हिंदू चेतना को जागृत करती थी वहीं दूसरी तरफ चुनाव संबंधी मामलों में जहां हिंदुओं के प्रति सोतेला व्यवहार हो रहा था उनके प्रति ब्रिटिश सरकार से संघर्ष करती थी। हिंदू महासभा के धार्मिक आयोजन यद्यपि एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में थे परंतु उनका एक राष्ट्रीय महत्व था। प्रथम वि वयुद्ध की समाप्ति तक हिंदू महासभा का राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव नगण्य था। पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय नेता के रूप में उभर कर आए, वे महासभा में अवश्य आ गए थे परंतु वह महासभा के आयोजनों को एक धार्मिक रूप प्रदान करना चाहते थे इसलिए मालवीय जी के साथ जितने भी कांग्रेसी नेता महासभा में आए सभी ने महासभा को कांग्रेस का पिछलग्गू बनाने की कोशिश की। महासभा के कई अधिवेशन कांग्रेस के साथ हुए परंतु उनका कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं था।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. सुमित सरकार, मॉडर्न इंडिया (1885–1947) पृ. 136
2. राम लाल वधवा, हिंदू महासभा (1928–1947) पृ. 01
3. वही पृ. 2
4. वही
5. अनिल कुमार मिश्र, हिंदू महासभा : एक अध्ययन, पृ. 33
6. प्रभु बापू, ऑल इंडिया हिंदू महासभा इन नॉर्थ कॉलोनियल इंडिया, 1915–1930, पृ. 17
7. जॉर्डन, हिंदू महासभा, पृ. 149
8. इंद्र प्रकाश, हिंदू महासभा एंड इट्स कंट्रीब्यूशन इन इंडियन पॉलिटिक्स, पृ. 17
9. स्वामी श्रद्धानंद, हिंदू संगठन, पृ. 107
10. वही पृ. 107–108
11. स्वामी श्रद्धानंद, हिंदू संगठन, पृ. 109
12. जॉर्डन, हिंदू महासभा पृ. 155
13. स्वामी श्रद्धानंद, हिंदू संगठन पृ. 110
14. जॉर्डन, हिंदू महासभा, पृ. 145
15. इंद्र प्रकाश, हिंदू महासभा एंड इट्स कंट्रीब्यूशन इन इंडियन पॉलिटिक्स, पृ. 12
16. स्वामी श्रद्धानंद, हिंदू संगठन, पृ. 109–110
17. वही पृ. 118
18. प्रभु बापू, ऑल इण्डिया हिन्दू महासभा इन नॉर्थ कॉलोनियल इंडिया, पृ. 20
19. होम, पोलिटिकल बी, फाइल सं. 49, मार्च 1916.
20. जॉर्डन, हिन्दू महासभा, पृ. 151
21. इंद्र प्रकाश, ए रिव्यू ऑफ द हिस्ट्री एंड वर्क्स ऑफ द हिंदू महासभा एंड हिंदू संगठन मूवमेंट, पृ. 15
22. प्रभु बापू, ऑल इंडिया हिंदू महासभा इन नॉर्थ कॉलोनियल इंडिया, 1915–1930 पृ. 23
23. आर. सी. मजूमदार हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया खंड सस पृ. 420
24. राम लाल वधवा, हिन्दू महासभा (1928–1947) पृ.21
25. अनिल कुमार मिश्र, पूर्वोद्धृत, पृ. 65